कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) अंतगड़ सूत्र में भगवान अरिष्टनेमि के शासन की कितनी आत्माओं का वर्णन है-
(क) 51 (ख) 90
(ग) 39 (घ) 60 (क)

(b) '' निहुओ'' शब्द का अर्थ हैं-
(क) समान (ख) इच्छा नहीं करना
(ग) स्थिर एकाग्र मन से (घ) निवृत्त होना (ग)

(c) '' आकाश '' की श्रेणी होती हैं-
(क) अनादि-अनन्त (ख) अनादि-सान्त
(ग) सादि-सान्त (घ) सादि-अनन्त (क)

(d) देवकुरू उत्तरकुरू के युगलिक देवगति में कहाँ तक उत्पन्न होते हैं-
(क) पहले देवलोक (ख) दूसरे देवलोक
(ग) पाँचवें देवलोक तक (घ) पहले किल्विषिक तक (घ)

(e) संसार ठगने के लिए,.....को धारण किया। रिक्त स्थान हेतु उपयुक्त शब्द हैं-
(क) धर्म (ख) संयम
(ग) वैराग्य (घ) उपर्युक्त तीनों (घ)

(f) भगवान पुरुषों में उत्तम होने से कहलाते हैं-
(क) नारायण (ख) शंकर
(ग) बुद्ध (घ) विधाता (क)

(g) मनुष्य जन्म का सार है-
(क) धार्मिकता (ख) निरोगता
(ग) ज्ञान प्राप्ति (घ) निर्ग्रन्थता (ख)

(h) 52 अनाचीर्ण में रात्रि भोजन कौनसा अनाचीर्ण है-
(क) दसवाँ (ख) छठा
(ग) तीसरा (घ) पाँचवाँ (घ)

(i) व्यंतर कृत कड़कने की आवाज होने से कौनसा अस्वाध्याय होता हैं-
(क) निर्घात (ख) यूपक
(ग) यक्षादिप्त (घ) दिग्दाह (क)

(j) नंदीसूत्र में कालिक एवं उत्कालिक सूत्रों के विवेचन में आगमों की कुल संख्या मानी गई है-
(क) 45 (ख) 32
(ग) 75 (घ) 125 (ग)

(k) पौषध में कितने प्रकार का त्याग दो करण तीन योग से किया जाता है-
(क) 3 (ख) 18
(ग) 10 (घ) 4 (घ)

(l) तीसरा प्रतिहार्य कहलाता हैं-
(क) स्फटिक सिंहासन (ख) चामर
(ग) अशोक वृक्ष (घ) छत्र (ख)

(m) नो गर्भज की आगति होती है-
(क) 329 (ख) 285
(ग) 371 (घ) 395 (क)

(n) एवंतामुनि ने कौनसे तप से मुक्ति प्राप्त की-
(क) लघुसर्वतो भद्र (ख) महासिंह निष्कीडित
(ग) गुणरत्न संवत्सर (घ) महासर्वतो भद्र (ग)

(o) सल्लं कामा विसं कामा.....आसीविसोवमा। रिक्त स्थान हेतु उपयुक्त शब्द है-
(क) अप्पा (ख) अकामा
(ग) माया (घ) कामा (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) अस्थिर आत्मा वाले को हड वृक्ष के समान बताया गया है। (हाँ)

(b) कामभोग चिरकाल तक सुखदायी है, किन्तु फिर क्षणमात्र के लिए दुःख देते हैं। (नहीं)

(c) समवायांग में अन्तगड़ सूत्र का एक श्रुतस्कंध, दश अध्याय तथा 7 वर्ग बताये हैं। (हाँ)

(d) लघुसर्वतो भद्र तप की एक परिपाटी में 75 दिन का तप व 25 दिन पारणे के होते हैं। (हाँ)

(e) अनीकसेन आदि मुनियों ने 10 पूर्वों का ज्ञान एवं तेले-तेले तप की आराधना की। (नहीं)

(f) जयंती श्रमणोपासिका ने सुलसा की तरह दीक्षा एवं केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष को प्राप्त किया। (नहीं)

(g) सातवीं नरक के नैरयिक आयुष्य पूर्ण कर मनुष्य में उत्पन्न नहीं होते हैं। (हाँ)

(h) उरपरिसर्प की गति 523 की नहीं हैं। (नहीं)

(i) मिथ्यादृष्टि की आगति में 5 अनुत्तर विमान को नहीं लिया गया है। (नहीं)

(j) गतराग ! हे विज्ञप्ति मेरी, मुग्ध की सुन लीजिए। (हाँ)

(k) जब धान्य पक जाता है तब वहाँ बादलों के बरसने का कोई लाभ नहीं हैं। (हाँ)

(l) रात्रि भोजन के त्याग से वर्ष में 6 माह की तपस्या का लाभ होता है। (हाँ)

(m) मेघ गर्जन होने पर एक प्रहर का अस्वाध्याय होता है। (नहीं)

(n) मूल सूत्रों के पठन-पाठन से धर्म रूपी वृक्ष का मूल सम्यक्त्व दृढ़ होता है। (हाँ)

(o) दसवाँ पौषध ग्यारहवें व्रत के अतिचारों के पाठ से पारा जाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	वुच्चइ	(क) संसार में	कहलाता है।
(b)	संपराए	(ख) गौतम कुमार	संसार में
(c)	गुणरत्न संवत्सर	(ग) 282	गौतम कुमार
(d)	देवकी रानी	(घ) 8 प्रहर	मुनिसुव्रतजी
(e)	रीयंते	(च) साधुता	जाते हैं।
(f)	शुक्लध्यान	(छ) 285	गजसुकुमाल
(g)	बलदेव की आगति	(ज) कहलाता है।	32 (बोनस अंक)
(h)	चांदनी	(झ) मुनिसुव्रतजी	शीतलता
(i)	देव दुन्दुभि	(य) 16 प्रहर	धर्मराज
(j)	उदितचन्द्र ग्रसित	(र) जाते हैं।	8 प्रहर
(k)	सूर्य ग्रहण	(ल) साँप	16 प्रहर
(l)	सम्यग्दृष्टि की गति	(व) गजसुकुमाल	282
(m)	गर्भज की आगति	(क्ष) धर्मराज	285
(n)	लोभ	(त्र) 32	साँप
(o)	पौषध	(ज्ञ) शीतलता	साधुता

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a)	मैं भोजराज उग्रसेन की पुत्री हूँ।	राजीमति
(b)	मैं कर्मों के आने के आश्रव द्वारों को रोक देता हूँ।	जितेन्द्रिय आत्मा
(c)	मैं त्रिकाल सत्य सिद्धान्तों का संग्रह हूँ।	आगम
(d)	वर्तमान आगमों को लिपिबद्ध करने का श्रेय मुझे प्राप्त है।	देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण
(e)	मेरा पौषण करने वाले व्रत का नाम पौषध है।	आत्म शान्ति
(f)	मैं वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूल छा जाने पर बनता हूँ।	रजोद्घात/रज-उद्घात
(g)	मेरे त्याग से मनोबल व आत्मबल बढ़ता है।	रात्रि-भोजन
(h)	मेरी आगति 243 की है।	बादर पृथ्वी पानी वनस्पति
(i)	मेरी गति 102 की है।	56 अन्तरद्वीप
(j)	मैं नारकी में पाँचवीं नरक तक ही उत्पन्न हो सकता हूँ।	उरपरिसर्प
(k)	मेरा वर्णन भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 2 में आता है।	जयन्ति बाई
(l)	मैं भगवान अरिष्टनेमि के शासन में प्रवर्तिनी हुई।	यक्षिणी साध्वी
(m)	मेरे निर्वाण स्थल का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता है।	अर्जुनमाली
(n)	मेरी एक परिपाटी में 1, वर्ष 2 माह, व 14 दिन तप के और 88 दिन पारणे के होते हैं।	कनकावली तप
(o)	हम भ्रमर वृत्ति वाले होते हैं।	जैन साधु

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) अन्तगड़ में वर्णित सभी साध्वियों के निर्वाण स्थल कौनसे थे ?

उ. सभी साध्वियों का निर्वाण स्थल सामान्य साधना स्थल- उपाश्रय, उद्यान या यक्षायतन आदि विचरण स्थल ही होते हैं ।

(b) गति आगति थोकड़े के आधार पर तेऊकाय व वायुकाय से सम्बन्धित एक ज्ञातव्य लिखिए।

उ. नोटः- दोनों में से एक मान्य

1. प्रज्ञापना सूत्र पद 20 के अनुसार तेउकाय, वायुकाय से निकला हुआ जीव आगामी एक भव में सम्यग्दृष्टि नहीं बन सकता, इसी कारण से तेउकाय, वायुकाय के जीवों को सम्यग्दृष्टि की आगति में नहीं लिया गया।

2. तेउकाय, वायुकाय के जीव आयुष्य पूर्ण कर तिर्यंच गति में ही उत्पन्न होते हैं। उस तिर्यंच गति में वह जीव सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

(c) 30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति लिखिए।

उ. 30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति 20 की- (15 कर्मभूमिज मनुष्य एवं 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय का पर्याप्त)

(d) '' एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा'' इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।

उ. सम्यक् बोध वाले विचक्षण पुरुष वे हैं जो मोहभाव के उदय से चंचल बनी चित्तवृत्तियों को ज्ञान के अंकुश से स्थिर कर लेते हैं।

(e) एवं खु नाणिणो सारं,जं न हिंसइ किंचणं। इस पंक्ति का अर्थ लिखिए।

उ. यही ज्ञान पाने का सार है कि साधक किसी जीव की हिंसा न करे।

(f) प्रत्यक्ष सुखकर.....भारी यही। इस पद्य पूर्ण कीजिए।

उ. प्रत्यक्ष सुखकर जैन मत में, प्रीति मेरी थी नहीं,
जिननाथ! मेरी देखिये, है मूढ़ता भारी यही।

(g) छत्र त्रयं.....प्रतापम्, श्लोक को पूर्ण कीजिए।

उ. छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर-प्रतापम्।

(h) आगम के स्वाध्याय से होने वाले प्रथम दो लाभ लिखिए।

उ. 1. सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति होती है।
2. आगम, स्वाध्याय रूप तप होने से कर्मों की निर्जरा होती है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) पक्खंदे.....अगंधणे।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अंगधणे।।

(b) सोही.....पावए।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घय-सित्तव्व पावए।।

(c) अंतगड़ सूत्र में वर्णित साधकों में से भगवान महावीर एवं अरिष्टनेमि के शासन में कितने पुरुष व स्त्रियाँ केवली हुए ?

उ. भगवान महावीर के शासन में 16 पुरुष एवं 23 स्त्रियाँ तथा श्री अरिष्टनेमि के शासन में 41 पुरुष एवं 10 स्त्रियाँ केवली हुए।

(d) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की गति आगति लिखिए।

उ. असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की आगति-179 की।
गति 395 की- (56 अन्तरद्वीपज, 51 जाति के देवता और पहली नरक, इन 108 के पर्याप्ता अपर्याप्ता 216+179 की लड़ =395)

(e) हा ! नित्य.....किसके लिए।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

उ. नोटः बोनस अंक दिया जाय
हा! नित्य घटती आयु है, पर पाप-मति घटती नहीं,
आयु बुढौती पर विषय, से कामना हटती नहीं।
मैं यत्न करता हूँ दवा में, धर्म में करता नहीं,
दुर्मोह-महिमा से ग्रसित हूँ, नाथ! सकता नहीं।

(f) त्वामामनन्ति.....पंथाः।। श्लोक को पूर्ण कीजिए।

उ. त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पंथाः।।

(g) रात्रि भोजन त्याग से होने वाले कोई तीन लाभ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई 3 मान्य-

1. आहार पर संयम होता है।

2. मनोबल व आत्मबल बढ़ता है।

3. अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है एवं स्वास्थ्य ठीक रहता है।

4. अनावश्यक जीव हिंसा से बचाव होता है व अनेक जीवों को अभयदान मिलता है।

5. सहज रूप में वर्ष में 6 मास की तपस्या का लाभ होता है।

6. स्वयं को तथा धर्मपत्नी या गृहणी को भी रात्रि में धर्मसाधना हेतु समय उपलब्ध हो जाता है।

7. दिन में भोजन बनाने से श्रावक-श्राविकाओं को अपने बारहवें अतिथि-संविभाग व्रत पालन करने का सहज ही सुअवसर प्राप्त होता है।

8. दिन में भोजन करने से भोजन को पचाने हेतु पर्याप्त समय मिल जाता है।

9. दिन में भोजन का नियम होने से शादी-विवाह आदि में रात्रि भोजों पर होने वाले अपव्यय से बचा जा सकता है।

10. रात्रि भोजन न करना जैनियों की मोटी पहचान है, अतः पहचान को कायम रखने के लिए रात्रि भोजन त्याग आवश्यक है।

(h) पौषध के 18 दोषों में से प्रथम 6 दोष लिखिए।

उ. 1. पौषध के निमित्त ठूँस-ठूँस कर आहार करे।

2.पौषध के निमित्त पहली रात्रि में मैथुन सेवे।

3. पौषध के निमित्त नख, केश आदि का संस्कार करे।

4. पौषध के निमित्त शरीर की सुश्रूषा करे।

5. पौषध के निमित्त आभूषण पहने।

6. पौषध के निमित्त सरस आहार करे।